विजया एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Vijaya Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 44, controlling revision 336425. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 44 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 44 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.44.1–39, Sanskrit Wikisource revision 336425, not a transcription of the original text.

विजया का प्रश्न और राम का समुद्र-संकट

KATHA 6.44.1–12

युधिष्ठिर वासुदेव कृष्ण से फाल्गुन कृष्ण एकादशी का नाम पूछते हैं। कृष्ण नारद द्वारा कमलासन ब्रह्मा से विजया का पुण्य पूछने का संवाद सुनाते हैं। ब्रह्मा इसे प्राचीन, पवित्र, पाप-नाशक और राजाओं को विजय देने वाला व्रत कहते हैं, जिसका यह वर्णन उन्होंने पहले किसी को नहीं बताया।

कथा राम के चौदह वर्ष के वनवास और सीता-लक्ष्मण सहित पंचवटी निवास को याद करती है। वहाँ रावण सीता का हरण करता है। दुख से व्याकुल राम घूमते हुए प्राणहीन जटायु देखते हैं; फिर वन में कबन्ध का वध और सुग्रीव से मित्रता होती है। राम के लिए वानर-सेनाएँ इकट्ठी होती हैं। हनुमान लंका के उद्यान में जानकी को देखकर राम का पहचान-चिह्न देते, महान कार्य करते और लौटकर राम को सब बताते हैं। चुना संस्कृत केवल उद्यान और पहचान-चिह्न कहता है; अंग्रेज़ी के अशोक-उद्यान विस्तार या किसी विशेष वस्तु को यहाँ अपने से नहीं जोड़ा गया।

हनुमान का समाचार सुनकर राम सुग्रीव की सहमति से प्रस्थान चाहते हैं। वे सौमित्र लक्ष्मण से पूछते हैं कि किस पुण्य से समुद्र पार होगा: वह बहुत गहरा और जलजीवों से भरा है, आसानी से पार करने का उपाय नहीं दिखता। यह पद्म पुराण का चयनित भक्तिपरक आख्यान है, वाल्मीकि रामायण का यह प्रसंग होने या ऐतिहासिक घटना का दावा नहीं। हरण और युद्ध कथा के तथ्य हैं, हिंसा या पीड़ित को दोष देने की सलाह नहीं।

Yudhishthira asks Vasudeva Krishna the name of Phalguna's dark-fortnight Ekadashi. Krishna recounts Narada asking lotus-seated Brahma about Vijaya's merit. Brahma describes an ancient, pure vow praised for removing sin and giving kings victory, whose account he says he has not previously told anyone.

The story recalls Rama's fourteen-year forest exile and residence at Panchavati with Sita and Lakshmana. Ravana abducts Sita there. Distraught, Rama wanders and sees Jatayu without life; Kabandha's killing in the forest and friendship with Sugriva follow. Vanara forces assemble for Rama. Hanuman finds Janaki in Lanka's garden, gives Rama's identifying token, performs a great deed and returns to report everything. The selected Sanskrit says garden and identifying token only; the English comparison's Ashoka-garden expansion or a particular object is not added here.

Hearing Hanuman, Rama chooses to depart with Sugriva's consent. He asks Saumitra Lakshmana what merit will help them cross the very deep ocean filled with aquatic creatures, seeing no easy means. This is the selected Padma Purana devotional account, not a claim that this episode belongs to the Valmiki Ramayana or is a historical event. Abduction and battle are narrative facts, not advice to use violence or blame a victim.

बकदाल्भ्य से सहायता और व्रत का आश्वासन

KATHA 6.44.13–25

लक्ष्मण राम को आदिदेव और पुराण पुरुषोत्तम कहते हैं। वे बताते हैं कि द्वीप में बकदाल्भ्य मुनि रहते हैं, उनका आश्रम आधा योजन दूर है और वहाँ अन्य अनेक ब्राह्मण भी हैं। राम को जाकर उस प्राचीन श्रेष्ठ ऋषि से पूछने की सलाह देते हैं। योजन को आधुनिक दूरी या यात्रा-निर्देश में नहीं बदला गया।

राम बकदाल्भ्य के पास जाकर सिर झुकाकर प्रणाम करते हैं, जैसे देव विष्णु को करते हैं। मुनि उन्हें किसी कारण मानव शरीर में आए पुराण पुरुषोत्तम के रूप में पहचानते और प्रसन्न होकर आगमन का कारण पूछते हैं। राम कहते हैं कि सेना सहित समुद्रतट पर लंका और राक्षसों को जीतने आए हैं; मुनि कृपा करके समुद्र पार करने का उपाय बताएँ।

प्रसन्न बकदाल्भ्य कमलनयन राम को एकाग्र होकर श्रेष्ठ व्रत करने को कहते हैं। फाल्गुन कृष्ण विजया से शीघ्र विजय, लंका और राक्षसों को जीतने पर निर्मल कीर्ति तथा वानरों सहित समुद्र पार करने का आश्वासन देते हैं। ये पात्र के धार्मिक वचन हैं, व्रत से युद्ध, परीक्षा, मुकदमे, व्यवसाय या किसी आधुनिक प्रयास में निश्चित सफलता का वादा नहीं।

Lakshmana calls Rama the primordial deity and ancient Purushottama. He says the sage Bakadalbhya lives on an island, his hermitage half a yojana away, with many other Brahmins there. He recommends consulting this ancient, eminent sage. Yojana is not converted into a modern distance or travel instruction.

Rama visits Bakadalbhya and bows his head, as a god bows to Vishnu. The sage recognises the ancient Purushottama who has entered a human body for some reason, and gladly asks why he has come. Rama explains that he has arrived at the seashore with an army to conquer Lanka and its rakshasas, asking the sage's favour and a means of crossing.

Delighted, Bakadalbhya tells lotus-eyed Rama to undertake the superior vow with concentration. He promises swift victory through Phalguna's dark Vijaya, pure fame after conquering Lanka and the rakshasas, and crossing with the vanaras. These are a character's religious assurances, not guaranteed success in war, examinations, litigation, business or any modern undertaking.

दशमी से द्वादशी तक पूरा विधि-वर्णन

KATHA 6.44.26–35

मुनि दशमी पर सोने, चाँदी, ताँबे या मिट्टी का सुसज्जित जलपूर्ण कलश और पल्लव रखने का वर्णन करते हैं। नीचे सात धान्य, ऊपर जौ और उस पर स्वर्ण नारायण का रूप आता है। सात धान्यों की नई सूची, निर्धारित मूल्य या सामग्री खरीदने का नियम नहीं गढ़ा गया।

एकादशी प्रातः स्नान, स्थिर कलश, गले में माला और लेप, पूगीफल तथा नारिकेल, गन्ध, धूप, दीप और विविध नैवेद्य का वर्णन है। दिन कलश के सामने अच्छी कथाओं में और रात जागरण में बीतने की बात है। अखण्ड व्रत के लिए घृतदीप का कथन भी है। ये ऐतिहासिक स्रोत-विवरण हैं, भोजन-पानी रोकने, नींद

छोड़ने या दीपक बिना निगरानी जलाते रहने की सलाह नहीं।

द्वादशी सूर्योदय पर कलश जल-स्थान, नदी के प्रस्रवण या तड़ाग तक ले जाकर स्थापित और पूजित करने का प्रसंग है। चयनित संस्कृत के तड़ाग और जल-स्थान को अंग्रेज़ी तुलना के नदी या धारा में रखने वाले शब्दों से नहीं बदला गया। जल में प्रवेश, वस्तुएँ विसर्जित करना या पर्यावरण को हानि पहुँचाना इस पाठ का आधुनिक निर्देश नहीं।

देव-रूप सहित कलश वेदपारग ब्राह्मण को और उसके साथ महादान देने की चर्चा आती है। मुनि राम को यूथपतियों सहित यह व्रत करने और विजय पाने का वचन देते हैं। ये स्रोत के सामाजिक और धार्मिक पद हैं, जाति-आधारित प्रवेश-नियम, दान का दबाव या खरीद की मांग नहीं। इच्छानुसार सरल स्मरण में भोजन, पानी, सुरक्षित विश्राम और देखभाल उपलब्ध रहें। दीपक प्रयोग करें तो निगरानी रखें और सोने से पहले बुझाएँ।

The sage describes a decorated water-filled pitcher of gold, silver, copper or clay with foliage on Dashami. Seven grains below, barley above and a golden Narayana image follow. No new list of seven grains, fixed price or purchasing rule is invented.

Ekadashi's morning bath, a steady pitcher, garland and unguents, pugi-phala and narikela, fragrance, incense, lights and varied food offerings are described. The day is spent hearing good accounts before the pitcher, and the night in vigil. A ghee lamp for an uninterrupted vow is also mentioned. These are historical source descriptions, not advice to withhold food or water, forgo sleep or leave a lamp unattended.

At Dwadashi sunrise the account takes the pitcher to a water-place, river spring or tank for placement and worship. Sanskrit's tank and water-place wording is not replaced with the English comparison's placement in a river or stream. Entering water, immersing objects or harming the environment is not a modern instruction from this reader.

Giving the pitcher with its divine image to a Brahmin versed in the Vedas and giving mahadanas accompany the description. The sage advises Rama to observe with troop leaders, promising victory. These source social and religious terms impose no caste-based access rule, donation pressure or purchasing requirement. Food, water, safe rest and care remain available for optional simple remembrance. If using a lamp, attend it and extinguish it before sleeping.

विजय और पूरा अध्याय-समापन

KATHA 6.44.36–39

राम सुनकर बताए अनुसार व्रत करते हैं। कथा कहती है कि रघुनन्दन विजयी हुए, सीता मिलीं, लंका जीती गई और युद्ध में पौलस्त्य रावण मारे गए। इस संक्षिप्त समापन में पुल-निर्माण, युद्ध का नया दृश्य या सीता की परीक्षा अपने से नहीं जोड़ी गई।

ब्रह्मा नारद को पुत्र कहकर बताते हैं कि इस रीति व्रत करने वाले इस लोक में विजय और अक्षय परलोक पाते हैं; इसलिए विजया व्रत करने की धार्मिक प्रशंसा है। विजया माहात्म्य सभी पाप मिटाने वाला और पढ़ने-सुनने पर वाजपेय का फल देने वाला कहा गया है। ये पूर्ण फल-वचन हैं, सफलता या परलोक की गारंटी और हानि की जिम्मेदारी से छूट नहीं।

अलग समापन इसे पद्म महापुराण की पचपन हजार वाली संहिता के उत्तर खंड का फाल्गुन कृष्ण विजया माहात्म्य, अध्याय 44 कहता है। इस चुने समापन में उमापति–नारद संवाद का पद नहीं है; दूसरे अध्याय से नहीं लाया गया। आरम्भ का कृष्ण–युधिष्ठिर और भीतर ब्रह्मा–नारद तथा राम–बकदाल्भ्य संवाद पूरा है। सभी 39 क्रमांकित इकाइयों का यह मूल संक्षिप्त गद्य पुनर्कथन है, संस्कृत प्रतिलेख या औपचारिक व्रत-पुस्तिका नहीं।

Rama hears and observes as instructed. The story says Raghunandana becomes victorious, Sita is recovered, Lanka conquered and Paulastya Ravana killed in battle. This compact close does not acquire an invented bridge-building scene, additional battle sequence or Sita trial.

Addressing Narada as son, Brahma says people observing in this way gain victory here and an inexhaustible hereafter, praising the Vijaya vow accordingly. Vijaya's greatness is said to remove all sins, with Vajapeya merit from reading or hearing. These complete religious benefit statements are neither guarantees of success or afterlife outcomes nor release from responsibility for harm.

The separate colophon identifies chapter 44 as Phalguna's dark Vijaya praise in the Uttara section of the Padma Mahapurana's fifty-five-thousand collection. This selected ending does not name an Umapati–Narada dialogue; that wording is not imported from another chapter. Krishna–Yudhishthira's opening and the inner Brahma–Narada and Rama–Bakadalbhya exchanges are complete. This original condensed prose retells all 39 numbered units, not a Sanskrit transcription or formal vow manual.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Vijaya Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.44.1–39, revision 336425, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.